Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/25040401V13P0016

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research Apr'25
Issue–IV(I), Volume–XIII

संजीव के 'धार' उपन्यास में आदिवासी समाज का यथार्थ चित्रण

डॉ.आर.व्ही.पोपळघट
स्व.भा.शिं.कला.प्रा.ना.गा.विज्ञान एवं
आ.गा.वाणिज्य महाविद्यालय, साखरखेर्डा ता.सि.राजा जि.बुलढाणा
भ्रमनध्वनी क्र. ९७६५९१६८३१
rajupopalghat11@gmail.com

सारांश :

'धार' उपन्यास में संजीव ने अपनी लेखनी से आदिवासी सर्वहारा समाज हमारी व्यवस्था एवं पूंजीपतियों द्वारा किस प्रकार से शोषण का शिकार हो रहा है। इसका चित्र प्रस्तुत किया है।

'संथाल' यह आदिवासी समाज की एक जनजाति हैं। मैना के माध्यम से एक संघर्षशील नारी के व्यक्तित्व को दिखाया है। वह आखिर तक महेंद्रबाबू जैसे पूंतीपतियों और हमारी व्यवस्था के रक्षक कहे जानेवाले लोगों का मुकाबला करती है। उसे अविनाश शर्मा और मंगर का साथ मिलता है। लेखक ने हमारी व्यवस्था पर भी सवाल उठाया है। मैना के साथ जेल में जिसप्रकार का व्यवहार किया जाता हैं, वह हमारे जनतंत्र के लिए दाग हैं। रक्षक ही अगर भक्षक बन गए आम जनता मरौसा किस पर करे? मैना को अपने पिता और पति का साथ नहीं मिल पाता। इसी कमजोरी का दूसरे लोग फायदा उठाते हैं। पूँजीपति लोग मजदूरों का आर्थिक शोषण करते है। ये मजदूरों को चार-चार महिने तक काम के पैसे नहीं देते। उनसे जानवरों से भी बदतर व्यवहार किया जाता है। आदिवासी समाज में अंधिविश्वास, कुप्रथाएँ भी व्याप्त है। कोयलांचल, अनैतिक दुष्कर्म, फैक्टरी में काम करनेवाले मजदूरों का शोषण तंत्र, भ्रष्ट व्यवस्था आदि बातों को यहाँ दिखाया गया है। अंतःकह सकते है कि संजीव के 'धार' उपन्यास में ।

Key Word: दलित, पीडित, शोषित, आदिवासी, भ्रष्ट न्यायव्यवस्था, मजदूरों की समस्याँए.

पृष्ठभूमिः

संजीव जी हिंदी के प्रसिध्द कथाकार है। उनका रचना संसार काफी विस्तृत है। उन्होंने अपने साहित्य में दलित, पीडित, शोषित, आदिवासी जीवन के दुख, भोगी हुई पीडाओं का यथार्थ चित्रण किया है। वे खुद इन पीडाओं से गुजरे हैं। सर्वहारा आदिवासी जीवन के सूक्ष्म पहलूओं को पकडने में उन्हें सफलता मिली हैं। आदिवासी सर्वहारा समाज कुप्रथाओं, अंधविश्वासों में उलझा हुआ है। उनकी सरलता एवं भोले भालेपन का फायदा उठानेवाले लोग अपने स्वार्थ के लिए उनका उपयोग करते हैं। वे सबके रहने लायक समता, न्यायपूर्ण और शोषणविहीन एक बेहतर दुनिया की रचना करना चाहते है। उनके साहित्य में शोषण तंत्र, नारी शोषण, माफिया-गुंडों का राज, भ्रष्ट पुलिस एवं भ्रष्ट न्यायव्यवस्था, मजदूरों की समस्याँए, दलित आदिवासी शोषण, गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक शोषण आदि समस्याओं का चित्रण हुआ है। पुलिस, शोषण, गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक शोषण आदि समस्याओं का चित्रण हुआ है। पुलिस, पूंजीपति, महाजन, ठेकेदार, दलाल आदि द्वारा आदिवासियों का शोषण किया जाता है। 'धार' उपन्यास में आदिवासी समाज के शोषण की समस्या को प्रस्तुत किया गया है।

'आदिवासी' की परिभाषा एवं निवास स्थान:

समाजशास्त्र विश्वकोश में आदिवासी की परिभाषा इस प्रकार दी है "किसी देश-प्रदेश के लोग जो आदिकाल से वहाँ निवास कर रहे है उन्हें उस देश प्रदेश का आदिवासी कहा जाता है। आदिवासी उस देश-प्रदेश के मूल निवासी होते है।" बहुत सी आदिवासी जातियाँ शहरों में आकर मजदूरी कर रही है। अधिकतर आदिवासी आज भी जंगलो में निवास कर रहे है। प्रमुख भारतीय जनजातियाँ जिसमें 'संथाल' जो बिहार और पश्चिम बंगाल के क्षेत्रों में पाई जाती है। 'भील' यह जाति मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान में पाई जाती है। 'थारु', खस यह जातियाँ उत्तर प्रदेश में पाई जाती हैं। 'ओराँव, खरिया, पहाडिया, मुंडा, संथाल आदि जनजातिया उडिसा, बिहार, मध्यप्रदेश आदि में रहती है।'

'धार' उपन्यास में आदिवासी समाज का शोषण:

संजीव का धार यह चौथा उपन्यास हैं। इस उपन्यास में 'संथाल' इस आदिवासी जनजाति का चित्रण किया गया है। 'संथाल', विहार के परगना और छोटा नागपूर के आदिवासी अंचल में रहनेवाली जनजाति है। कोयला खदानों, फैक्टरियों में काम करनेवाले मजदूरों की व्यथा एवं उनके होनेवाले शोषण को इस उपन्यास में चित्रित किया गया हैं। यह लोग दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष करते दिखाई देते हैं। हमारे आजाद भारत की यह सबसे बडी विडंबना है। इस उपन्यास में 'मैना' एक आदिवासी स्त्री है। मैना के पिता संथाल है तो माँ जयारापेशा याने गुलगुलिया है। उपन्यास का प्रारंभ ही मैना के जेल से छूटने से होता है। पूँजीपति का विरोध करने के कारण ही मैना को जेल जाना पडा था। इन आदिवासियों के जीवन मे मश्किले बढ गई थी। खेती में काम नहीं होने से मैना कहती है, "खेत, खटार, पेड, रुख, कुआँ, तालाब, हम और हमरा बाल-बच्चा तक तेजाब में जल रहा है।" मजदूरी के लिए भी दर-दर भटकना पडता है। मैना जब गाँव पहुँचती है तब उसके साथ मंगर भी है। आदिवासियों पर जेल में भी अत्याचार होते है। मैना पर जेल में जेलर हमरा साथ जबरदस्ती किया, उसी खातिर बच्चा उसका मुँह पे मार के चला आया। जेल में भी गरीब सुरक्षित नहीं है, वहाँ भी उसे अन्याय, अत्याचार का शिकार होना पडता है। यहाँ डॉ. ऋषिकुमार चतुर्वेदी के विचार महत्वपूर्ण लगते हैं, "पुलिस तंत्र पीडकों को संरक्षण देता है और पीडितों को और अधिक पीडित कर रहा है।" रक्षक ही भक्षक बन गए हैं। ऐसी स्थिती में किस पर विश्वास किया जाय ?

पूँजीपति महेंद्रबाबू गरीब आदिवासियों के भोलेपन एवं अज्ञान का फायदा उठाकर उनकी जमीन पर तेजाब की फैक्टरी शुरु करता है। उसका उद्देश आदिवासियों को रोजगार देना नहीं है । वह उनका शोषण करता हैं। वहाँ मजदूरों को काम तो दिया जाता है लेकिन उन्हें समय पर पूरी मजूदरी नहीं दी जाती। मजदूर परेमालू ला गरीबी, शोषण से तंग आकर भाई को मंगर द्वारा पत्र लिखवाता है जिसमें वह लिखता हैं, "धंदा पानी हिया पे ठीक नई। अब हमरा गाँव भिख्मंगा हो गया .... हिंया भीख और पुलिस का दलाली छोड के कोई धंदा नहीं ।... सीलतोडी... चोरी से कोईला काटने का लेकिन पकडाये तो खैर नहीं। कोई नहीं बचाने आयेगा ।" इन लोगों को मजबुरी में यह काम करना पडता है। रात-दिन मेहनत करने के बाद भी भूखा रहना पडता हैं। एक मजदूर अपनी व्यथा को बताते हुए कहता है, "चार-चार महिना का तनखाह रोक के रखा, पूरा बाँसगडा में जहर घोल दिया, सबको लंगडा लुला, अपाहिज और रोगी बना दिया।" इससे स्पष्ट होता है कि आदिवासी मजदूरों के साथ जानवरों से भी बदतर व्यवहार किया जाता हैं। चार-चार महिने अगर उन्हें उनकी मेहनत के पैसे नही मिलेंगे तो यह लोग कैसे जीवनयापन कर सकते हैं? पूँजीपति वर्ग अपने स्वार्थ हेतु मानमानी करते हुए दिखाई देता है। जिनके श्रम पर वह जीता है उन्हीं का शोषण करता है। इस संदर्भ में केशवदेव शर्मा लिखते हैं, "वर्तमान समय में शोषण, शिक्षितों में बेकारी पूँजीपति निरंतर प्रगति करता जा रहा है। वह निम्न वर्ग का अपनी पूरी क्षमता से शोषण करने में तल्लीन हैं। इससे स्पष्ट

होता हैं कि, गरीब निम्न सर्वहारा आदिवासी वर्ग का शोषण करके समाज का एक वर्ग दिनोंदिन अमीर बनता जा रहा है तो दूसरा वर्ग गरीब से गरीब बनते जा रहा है।

मैना स्वाभिमानी एवं संघर्ष करनेवाली स्त्री है। वह अपने पति एवं पिता के खिलाफ संघर्ष करती है। मैना के पिता अपनी जमीन महेंद्रबाबू को तेजाब की फैक्टरी शुरु करने के लिए दी थी। मैना इसके विरोध में गाँववालो के साथ मिलकर आंदोलन करती है। उसका पती भी उसका साथ नही देता। वह अपने पति को त्याग देती है और मंगर के साथ रहती है। आदिवासियों के जीवन मे लोकाचार और अंधविश्वास को महत्व दिया जाता है। मैना और उसकी माँ को ओझे द्वारा डायन घोषित किया जाता है। यह सब महेंद्रबाबू द्वारा करवाया जाता हैं। आदिवासियों में डायन घोषित करने पर उस औरत को जान से मारा जाता है या उसे गाँव से भगाया जाता हैं। इस प्रथा का शिकार मैंना की माँ को होना पडता है।

मैना का संघर्ष जेल से छूटने के बाद भी चलता रहता हैं। वह जनमोर्चा के अविनाश शर्मा आदि के साथ मिलकर फैक्टरी के विरोध में लडती रहती है। मजदूर फैक्टरी में काम नहीं करना चाहते । मजदूरों को अवैध रुप से कोयला निकालकर बेचना पडता हैं। मैना को अपने बाप के घर से कोयले का खजाना मिलाता हैं। वह सारे लोगों को कोयला निकालने के लिए कहती है। महेंद्रबाबू कोयले की जमीन खरीद लेते हैं। बडी दयनीय अवस्था में आदिवासी समाज को अपना जीवनयापन करना पडता है। आदिवासियों की दयनीय स्थिती के बारे में अविनाश शर्मा मंगर से कहता हैं, "अभी धान की रोपनी का वक्त है- कुछ, अपने खेत, कुछ, मजुरी, थोडी चहल-पहल नजर आ रही है।

अभी ... अवैध कोयला खनन भी गड्डों में पानी भर जाने सें बंद है।... रातभर अवैध कोयला खनन में काम करने के बाद दिन का सोना ।" इन लोगों को अवैध कोयला खनन तथा सिलतोडी करने अपना जीवन यापन करना पडता हैं। बाँसगडा गाँव की इस अवस्था पर संजीव लिखते है, "न दिल है न रात, दोनों की दहलीज पर संथाल परगना का पूरा नंगा इलाका घायल गुर्राते सुअर की तरह पडा है। नंगी, अधनंगी, पहाडियाँ, जहाँ-तहाँ खेड साल महुए, खजूर और ताड के पेड ढेर की इ गाँडियों, वंजर धरती, सुखती नदियाँ, सुखते कुएँ तालाब, भयंकर पोखरियाँ, खोंदे, जहाँ-तहाँ सोये पडे मुर्दे से लोग, है कोई जानगुरु (ओझा) जो इन्हें मंत्र से शापमुक्त कर दे।" आदिवासी मजदूर लोग मानवनिर्मित शोषित व्यवस्था के शिकार हो चुके हैं। उन्हें इस स्थिती से मुक्त करनेवाला कोई मिले तो चमत्कार हो जाए ऐसा लेखक को लगता है। कोयला खदान और कारखानों के प्रदूषण के कारण दमघोटू वातावरण, खाँसते लोग, गंदगी यहाँ फैल चुकी है।

अविनाश शर्मा और मैना सैकडों आदिवासियों की मदद से एक को-ऑपरेटीव्ह बनाते है। कठोर मेहनत, श्रध्दा, संघठन के बल पर कुछ ही दिनों में जन खदान उँचाई पर पहुँचती है । आवश्यक कोयला लेकर बाकी कोयला राष्ट्र को सौंपा जाने का निर्णय होता हैं। सरकारी अधिकारियों को पाठशाला, अस्पताल, कॅन्टीन, फाईल, रजिस्टर आदि देखकर आश्चर्य होता हैं उन्हें कहीं भी खोट नहीं दिखाई देती। इस संदर्भ में लेखक लिखते हैं, "काम का एंग रख रखाव, श्रमिकों का मनोबल सारा कुछ, देखकर वे निराश हुए, उन्हें खोट चाहिए थी। मगर वह मिल नहीं रही थी ।" सरकार पुलिस की मौजूदगी में बुलडोजर चलवाकर जन खदान को नष्ट करवा देती है। मैना और शर्मा आखिर तक लडतें रहते हैं। प्रो. सुवासकुमार के विचार यहाँ महत्वपूर्ण लगते है, वे लिखते हैं, "मैना के जीते जी उसके बाप और पति ने उसका श्राध्द कर डाला, पर संयोग से ऐसा की मैना इन दोनों के मौत के बाद भी जीवित रही, शोषित वर्ग की जिजीविषा बनकर । तेजाब फैक्टरी वाले शोषकों ने मजदूरों को कुत्ता बना दिया, औरतों को रंडी। शासन, शिक्षा,

पुलिस, रोजगार चारों तरु से रास्ता बंद मार खाती, लुटती मैना फिर भी खत्म नाहीं होती इससे स्पष्ट है की, आदिवासी सर्वहारा वर्ग कितनी भयंकर यातनाओं को सह रहा हैं। उसका जीवन जीना दूभर हो गया है। जन्म से लेकर मृत्यू तक उसे इस शोषणमुखी व्यवस्था का शिकार होना पडता है। क्या इन लोगों की समस्याएँ काम करने के लिए हमारे स्वतंत्र भारत में कोई व्यवस्था निर्माण होगी ? इसका उत्तर अभी भी किसी के पास नहीं हैं।

संदर्भ संकेत:

१. समाजशास्त्र विश्वकोश हरिकृष्ण रावत, पृ.१
२. धार (उपन्यास) संजीव, पृ. ५६
३. वही पृ. १२
४. हिंदी कहानी एक दशक-डॉ. ऋषिकुमार चतुर्वेदी
५. घार (उपन्यास) संजीव, पृ. ४३
६. वही. पृ. ६०
७. आधुनिक हिंदी उपन्यास और वर्ग संघर्ष डॉ. केशवदेव शर्मा, पृ. १६४
८. धार (उपन्यास) संजीव, पृ. ३७
९. वही - पृ. ४१
१०. वही पृ. १५५
११. कथाकार संजीव संपादक प्रो. सुवासकुमार, पृ. २८६
१२. आदिवासी साहित्य यात्रा - संपा.रमणिका गुप्ता,पृ.५